एक दिन मैं एक बहुत व्यस्त व्यापारिक क्षेत्र से होकर जा रहा था। वहाँ लोगों की भारी भीड़ थी — हर कोई अपने काम में लगा हुआ। तभी आगे मैंने देखा कि एक युवक झुक गया है। कुछ ही देर में वह नीचे बैठ गया और ज़ोर-ज़ोर से उल्टियाँ करने लगा। उसका चेहरा दर्द से भरा हुआ था। उसे देखकर मेरे हृदय में बड़ी करुणा जागी — मैं उसकी पीड़ा को महसूस कर पा रहा था।

कुछ बीमारियाँ ऐसी होती हैं जिन्हें इंसान सह सकता है जब तक कि वह डॉक्टर तक न पहुँच जाए, पर उल्टी ऐसा दर्द है जिसे रोका नहीं जा सकता। जिसने भी कभी उल्टी की है, वह जानता है कि उस समय शरीर की सारी ताकत निकल जाती है — मानो आधा जीवन ही समाप्त हो गया हो।

ठीक वैसे ही हम परमेश्वर को महसूस कराते हैं, जब हमारे जीवन का स्वभाव “गुनगुना” होता है — न ठंडा, न गरम। परमेश्वर ने कहा है:

प्रकाशितवाक्य 3:15-19
[15] “मैं तेरे कामों को जानता हूँ; तू न ठंडा है, न गरम। भला होता कि तू या तो ठंडा होता या गरम।
[16] इसलिए, क्योंकि तू गुनगुना है, और न ठंडा न गरम, मैं

तुझे अपने मुँह से उगल दूँगा।
[17] तू कहता है, ‘मैं धनी हूँ, मैंने धन प्राप्त कर लिया है, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं’; पर तू नहीं जानता कि तू दीन, दुखी, कंगाल, अंधा और नंगा है।
[18] मैं तुझे सम्मति देता हूँ कि तू मुझसे आग में तपी हुई सोना मोल ले, कि तू धनी हो जाए; और उजले वस्त्र ले कि पहन कर अपनी नग्नता की लज्जा न प्रकट कर; और आँखों में लगाने की
मरहम ले कि देख सके।
[19] जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हें मैं ताड़ना देता हूँ
और सुधारता हूँ; इसलिए उत्साही बन, और मन फिरा।”

“गुनगुना” होना यानी केवल धार्मिक दिखना लेकिन आत्मिक न होना। तुम सभा में जाते हो, लेकिन जीवन में कोई परिवर्तन नहीं। तुम चर्च में शालीन कपड़े पहनते हो, पर बाहर अशोभनीय वस्त्र पहनते हो। तुम मंडली में भजन गाते हो, पर घर में सांसारिक गीत सुनते हो। तुम सेवा करते हो, पर किसी और के पति या पत्नी के साथ रहते हो।

ऐसा जीवन मसीह के लिए असहनीय है।
यदि तुम्हें उल्टी करना अच्छा नहीं लगता — तो फिर तुम क्यों परमेश्वर को वह अनुभूति देते हो?

मसीही जीवन कोई “घटना” नहीं, बल्कि एक यात्रा है। यह केवल यह कह

देना नहीं कि “मैंने यीशु को अपने मुँह से स्वीकार किया” — नहीं! यह आत्मिक वृद्धि का मार्ग है। जो जीवित है, वह बढ़ता है। यदि तुम हर दिन वैसे ही बने रहते हो, तो तुम गुनगुने हो।

ला॓ओदीकिया की कलीसिया को अपने धन, अपने संगीत यंत्रों, अपने बड़े सम्मेलनों और बाहरी आकर्षण पर घमण्ड था। पर यीशु ने देखा कि वह आत्मिक रूप से ठंडी थी। वह बाहर से परमेश्वर का आदर करती थी, पर भीतर से बर्फ से भी ठंडी थी।

आज भी बहुत लोग सच्ची उपासना को भूलकर पैसे, प्रसिद्धि और मनोरंजन के पीछे दौड़ रहे हैं। वे आत्मा का संदेश नहीं, बल्कि कानों को भाने वाली ध्वनि खोजते हैं। और जब वे किसी को आत्मिक रूप से दृढ़ देखते हैं, तो उसे “अति-धार्मिक” कह देते हैं।

मित्र, अब मन फिरा।
तेरा सौंदर्य, तेरी प्रसिद्धि, तेरा संसार — इन सबका मसीह से कोई लेना-देना नहीं।
वे अशोभनीय तस्वीरें और पोस्टें जिन्हें तू सोशल मीडिया पर डालता है, वे व्यभिचारी साइटें जिन्हें तू देखता है, वह गुप्त पाप जिसमें तू गिरा है — और फिर भी कहता है “मैं उद्धार पाया हूँ”? क्या यह सब परमेश्वर को उल्टी करने पर मजबूर नहीं करता?

यीशु को सचमुच ग्रहण कर — विश्वास में स्थिर हो, ताकि तू जीवित

परमेश्वर को देख सके, न कि केवल उसकी मूर्ति को।

याद रख, यह समय पूरी तरह खड़े रहने का है, क्योंकि अंत समीप है। जब उठाया जाना होगा (रैप्चर होगा), तो प्रभु के साथ वही जाएंगे जो गरम हैं, गुनगुने नहीं।

मन फिराव का अर्थ है — मुड़ जाना।
आज ही सच में मुड़ जा, और प्रभु तुझे क्षमा करेगा, नया आरंभ देगा।
यदि तू आज उद्धार पाना चाहता है — तो हमारे साथ जुड़ और “प्रायश्चित की प्रार्थना” में सहभागी बन।

प्रभु तुझे आशीष दे।
इस सुसमाचार को औरों के साथ बाँट।
यदि तू यीशु को अपने जीवन में ग्रहण करने में सहायता चाहता है, तो इस संदेश के नीचे दी गई संपर्क जानकारी से हमसे निःशुल्क संपर्क कर।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:

गुनगुना जीवन — जो परमेश्वर को पीड़ा देता है

WhatsApp